भजन

तर्ज–सौ बार जनम लेगें

होगा ना हुआ कोई,जैसे मेरे धामधनी
आकर बैठे दिल में,किया दिल को अर्श धनी

1–बेशक हम भूले थे तूने आके जगाया है
देकर वाणी अपनी हमें अपना बनाया है
मैं तो धनी कुछ भी नही सब तेरी मेहर है धनी

2–तेरे इश्क को हम भूले निसबत ना पहचानी
तुम आये भेष बदल सुध अपनी सब दीन्ही
चौदह तबको मे नही तुमसा मेरे धाम धनी

3–तेरी मेहर से हम जाने तुम सेहेरग से हो नजीक
तुम हमसे जुदा नही ये दिल को हुआ तहकीक
सब फन्दे छुड़ा दीन्हे मेहरबां मेरे धनी